GLOBAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY STUDIES ISSN: - 2348-0459
www.gjms.co.in
Volume-6, Issue-3, February 2017 Impact Factor: 2.389

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन

माधुरी राठौर
Research Scholar, (UGC SRF), Department of Education, University of Allahabad, Allahabad

सारांश वर्तमान समय में देश की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि शिक्षा को न सिर्फ गुणवत्तार्पूवक बनाया जाये बल्कि अधिकाधिक रोजगारपरक भी बनाया जाये। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में सवेक्षण विधि के आधार पर बरेली बाहर के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चना गया है। अनियमित न्याय दर्शन विधि का प्रयोग करते हुये उच्चतर माध्यमिक स्तर के 120 विद्यार्थियों को न्याय दशन के रूप में चुना गया । विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति को मापने के लिये जी0आ0सोनटके द्वारा निर्मित व्यावसायिक अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में यह पाया गया कि छात्र व छात्राओं की नौकरी सम्बन्धी अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है किन्तु व्यापार सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। तथा निम्न पारिवारिक आय तथा मध्यम पारिवारिक आय से सम्बन्धित विद्यार्थियों की नौकरी सम्बन्धी अभिवृत्ति में अन्तर पाया जाता है। मध्यम तथा उच्च पारिवारिक आय के विद्यार्थियों का नौकरी के प्रति रूझान अधिक होता है। विद्याथियों के पारिवारिक आकार एवं पृष्ठभूमि के आधार पर व्यावसायिक अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं पाया जाता है। इसलिये सभी विद्यार्थियों को बिना किसी भेदभाव के समान रूप से व्यावसायिक निर्देशन दिया जाना चाहिये।

शब्दकोश – पारिवारिक आकार , मानव विकास, गुणवत्तार्पूवक

प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास (पस्टॉलाजी) उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि (जे0एस0मैकेन्जी) एवं व्यवहार में परिवर्तन (स्किनर) किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक (हरबर्ट) बनाया जाता है। शिक्षा ने ही मनुष्य के सर्वोच्च आदर्शो को सदा प्रवाहित किया है।

प्राचीन समय में शिक्षा का स्वरूप सरल था। उस समय की शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में चरित्र, प्रकृति, कौशल, एवं नैतिक गुणों का निर्माण करना था। समय परिवर्तन के साथ सामाजिक व्यवस्था जटिल होती गयी। आज वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के फलस्वरूप व्यक्तियों के दृष्टिकोणों में भी परिवर्तन हुआ तथा सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप ही बदल गया। दिन–प्रतिदिन मनुष्य की आवश्यकतायें बढ़ती गयीं। उसका दृष्टिकोण भौतिकवादी हो गया। भौतिक सुख–साधनों की प्राप्ति के लिये मनुष्य की प्रकृति धन केन्द्रित होती गयी है। फलस्वरूप व्यवसाय ने मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान ले लिया है। अतः वर्तमान समय में मानवोय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रमों के नवीन प्रत्यय को शामिल किया गया। इसो के माध्यम से विद्यार्थी भविष्य में जीविकोपार्जन की समस्या हल कर सकते ह।

वर्तमान समय में व्यावसायिक शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है। आज शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में व्यावसायिक कुशलता का विकास करना है। स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी ने जामिया–मिलिया–इस्लामिया में उर्दू दीक्षांत समारोह में भाग लेते हुये कहा कि सिर्फ वही तालोम कायम रह सकती है, जो व्यावहारिक जीवन में तालमेल रखती हो। उपयोगिता के बिना केवल दिमागी ज्ञान से कोई लाभ नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिये कि लोग शिक्षा के विभिन्न सिद्धान्तों, उददेश्यों, एवं आदर्शो में अन्तर समझ सके। शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिससे पिछड़े और निम्न वर्गो का लाभ मिल सके। साथ ही प्रतिभाशाली छात्रों को पूर्ण प्रोत्साहन मिल सके।

व्यावसायिक शिक्षा का स्वरूप

भारतवर्ष में व्यावसायिक शिक्षा का इतिहास अति प्राचीन है। पाचीन काल में यह शिक्षा अपने चरमोत्कर्ष पर थी। वैदिक काल (2500ई0पू0 से 500ई0पू0) में व्यावसायिक शिक्षा को आवश्यक समझकर उसकी समुचित व्यवस्था की गयी थी जैसे– सैनिक शिक्षा, चिकित्सा शास्त्र की शिक्षा एवं वाणिज्य।

बौद्धकाल (500ई0पू0 से 1200ईसवी) में तक्षशिला विश्वविद्यालय में 10 शिल्पों की व्यवस्था थी। आखेट, चिकित्सा, धनुर्विधा, हस्तिज्ञान, भवन निर्माण, मूर्तिकला, कृषि, वाणिज्य, लेखन कला आदि की शिक्षा प्रगति पर थी।

मुस्लिम काल (1200ईसवो–1700ईसवी तक) में व्यावसायिक शिक्षा की उन्नति हुयी। मुख्य कलाओं में कशीदाकारी, जरी, लकड़ी, व हाथी दाँत का काम, दरी, रेशम, मलमल तथा आभूषण बनाना शामिल था।

ब्रिटिश काल (1700ईसवी से 1947 तक) में व्यावसायिक शिक्षा अपने चरमोत्कर्ष पर थी। परन्तु ईस्ट इण्डिया कम्पनी की धन लोलुप नीति के कारण वस्त्र उद्योग, कांच, कागज, धातु तथा जलपोत उद्योगों को गहरी क्षति पहुंची। परिणामतः लाखो शिल्पी बेरोजगार हो गये। परन्तु शीघ्र ही ब्रिटिशों ने व्यक्तिगत स्वार्थ को ध्यान में रखते हुये वुड के घोषणा–पत्र (1854) में व्यावसायिक शिक्षा को बड़े पैमाने पर छात्रों पर लागू किये जाने की बात कही। सन् 1807 में महारानी विक्टोरिया की जयंती के अवसर पर बम्बई में विक्टोरिया जुबली टेक्निकल इंस्टीट्यूट की स्थापना की गयी। 1882 में हण्टर कमीशन ने पाविधिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को समझकर सर्वप्रथम 10वीं के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को स्थान दिया। सन् 1917 के सैडलर कमीशन ने 12वीं स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा का सुझाव दिया। सम्पूर्ण देश की आश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये सन् 1947 तक इंजीनियरिंग एवं प्राविधिक शिक्षा देने वाले 28 डिग्री संस्थान तथा 41 पॉलीटेक्निक संस्थान स्थापित किये जा चुके थे।

स्वतन्त्र भारत में व्यावसायिक शिक्षा

सन् 1947 में स्वतंत्र भारत में व्यावसायिक शिक्षा एक नवीन सिरे से आरम्भ हुयी। देश में औद्योगिक विकास एवं आवश्यकताओ को ध्यान में रखते हुये प्रशासकों, शिक्षाविदों ने अपने सुझाव, विचार एव स्वानुभवों के आधार पर पंचवर्षीय योजनाओं में अनेक प्रकार के कार्यक्रम संचालित किये तथा व्यावसायिक शिक्षा के सन्दर्भ में विभिन्न आयोगों ने अनेक सुझाव दिये। डॉ0 राधाकृष्णन शिक्षा आयोग (1948–49) ने प्राथमिक माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा में कृषि शिक्षा को सर्वोच्च स्थान दिय जाने का सुझाव दिया। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952) ने छात्रों में व्यावसायिक कुशलताओं की उन्नति, बड़े नगरों तथा औद्योगिक क्षेत्रों में तकनीकों तथा ग्रामीण स्कूलों में कृषि शिक्षा की सुविधाओं का विस्तार किये जाने का सुझाव दिया। शिक्षा आयोग (1964–66) ने छात्रों को व्यावसायिक एवं प्राविधिक प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु पत्राचार पाठ्यक्रमों की व्यवस्था किये जाने का सुझाव दिया। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर वाणिज्यिक, औद्योगिक कार्यो के विभिन्न पाठ्यक्रमों की व्यवस्था करने का सुझाव दिया।

अभिवृत्ति

अभिवृत्ति से हमारा तात्पर्य व्यक्ति के उस दृष्टिकोण से है जो किसी व्यक्ति, वस्तु, संस्था अथवा स्थिति के प्रति किसी विशेष प्रकार के व्यवहार को इंगित करता है। अन्य शब्दों में अभिवृत्तियाँ व्यक्तित्व पद्धतियों की ओर इंगित करती ह जिनके किसी निश्चित वस्तु, व्यक्ति या स्थिति के प्रति व्यक्ति व्यवहार का निर्णय किया जाता है।

अभिवृत्ति एक ऐसी स्थायी प्रणाली है जिसमें एक संज्ञानात्मक अवयव, एक अनुभूति सम्बन्धी अवयव तथा एक सक्रिय प्रवृत्ति रहती है। अभिवृत्ति में एक भावात्मक अवयव भी सम्मिलित रहता है। यही कारण है कि जब भी कोई अभिवृत्ति बनती है तो वह परिवर्तन की प्रतिरोधी हो जाती है व सामान्यतः नये तथ्यों के प्रति अनुक्रिया नहीं करती। अभिवृत्ति में आस्थाओं और मूल्यांकन का भी समावेश रहता है।

व्यावसायिक अभिवृत्ति

व्यावसायिक अभिवृत्ति वह मानसिक तत्परता है जो किसी व्यवसाय के चुनाव में सहायक होती है। अभिवृत्ति के अनुकूल व्यवसाय के चुनाव से व्यक्ति उस व्यवसाय में अवश्य सफल होता है। आधुनिक काल में भिन्न–भिन्न प्रकार के व्यवसाय उपलब्ध है। अब पारिवारिक या परम्परावादी व्यवसायों का अपनाना आवश्यक नहीं है। मनुष्य अभिवृत्ति एवं अभिरूचि के अनुसार व्यवसाय का चुनाव कर सकता है। सुपर का मत है कि अभिवृत्ति के अनुसार चुने व्यवसाय में समायोजन अच्छा होता है।

व्यवसाय के चुनाव में समाज परिवार और बाह्य वातावरण का प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थी अपनी अभिरूचि एवं अभिवृत्ति के अनुकूल व्यवसाय चुनाव नहीं कर पाते। इसलिये अधिकांश व्यक्तियों को अपने व्यवसाय से असन्तोश होता है। यह असंतोश उनके व्यावसायिक जीवन की असफलता का कारण बन जाता है। टाडमैन का अभिमत है कि यदि व्यक्ति अपनी अभिवृत्ति के अनुकूल व्यवसाय का चुनाव करें तो वे सुखी जीवन जी सकते ह। वर्तमान युग में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर व्यवसाय अथवा कोर्स के चुनाव का परामर्श दिया जाना आवश्यक है।

परामर्श की दष्टि से व्यवसाय प्रमुख दो भागों में बाँटे गये ह–

1. नौकरी
2. व्यापार

अधिकांश व्यक्ति व्यापार की अपेक्षा नौकरी को अधिक महत्व देते ह, जबकि कुछ व्यक्ति व्यापार को श्रेष्ठ समझते है। दोनों प्रकार के काया में गुण–दोष तो ह, परन्तु कार्य की सफलता कार्य से सम्बन्धित अभिवृत्ति पर निर्भर है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

कपिल (2010) ने उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की व्यावसायिक अभिवृत्ति के सम्बन्ध में किया तथा यह निश्कर्ष प्राप्त किया कि विभिन्न व्यवसाय के पाठ्यक्रमों की अभिवृत्तियों पर जाति प्रथा, आर्थिक, सामाजिक स्तर पर अभिभावकों की शिक्षा का प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थियों में

सामाजिक व प्रजातांत्रिक मूल्यों का तो ज्ञान था लेकिन धार्मिक शिक्षा का ज्ञान नहीं था।

कुलकर्णी (2004) ने माता की शिक्षा का उनके बालकों की व्यावसायिक अभिवृत्तयों पर प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि शिक्षित माता के बालकों की व्यावसायिक अभिवृत्तियाँ साहित्यिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्रों में अधिक तथा अशिक्षित माताओं के बालकों की अभिवृत्तियाँ कृषि तथा गृह प्रबन्धन में अधिक है।

मिश्रा (2000) ने श्रवण विकलांग विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन 53 छात्र–छात्राओं पर किया एवं यह निश्कर्ष प्राप्त किये कि श्रवण विकलांग विद्यार्थियों की आयु उनकी व्यावसायिक अभिवृत्ति को प्रभावित करती है। निम्न व उच्च आयु स्तर के श्रवण विकलांग विद्यार्थियों ने गृह प्रबंधन, कलात्मक व रचनात्मक क्षेत्रों में समान रूचि पायी गयी।

सिंह (1993) ने हायर सेकेण्ड्री स्तर पर विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया एवं अपने अध्ययन में यह पाया कि हायर सेकेण्ड्री स्तर पर व्यावसायिक कक्षाओं में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है। उन्होंनें यह भी निश्कर्ष दिया कि कक्षा व लिंग के आधार पर छात्रों से भेदभाव नहीं करना चाहिये। अतः अभिभावकों एवं अध्यापकों को विद्याथियों की व्यावसायिक कोर्स की आवश्यकता व महत्व को ध्यान में रखते हुये शिक्षा दिलान का प्रयत्न करना चाहिये।

सोंधी (1988) ने चंडीगढ़ की किशोर छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक चयन का अध्ययन किया एवं यह निश्कर्ष निकाले कि अध्ययन की गयी छात्राओं में से बहुत कम छात्राये ऐसी थी जो अपने अनुसार भविष्य में व्यापार चयन के लिये योग्य थी। बाहरी छात्रायें व्यापार चयन एवं व्यावसायिक अभिवृत्ति में अधिक योग्य थी।

शोध का औचित्य

वर्तमान युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग है। देश में तीव्र गति से हो रहे औद्योगीकरण के फलस्वरूप विभिन्न उद्योगों में हस्तकौशल व प्रशिक्षण प्राप्त छात्रों की आवश्यकता बढ़ी है। जिसके फलस्वरूप हायर सेकेण्ड्री स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रम को शामिल किया। अतः व्यावसायिक शिक्षा में प्रशिक्षित व्यक्तियों को इन उद्योगों में रोजगार के अवसर शीघ्र प्राप्त हो जाते है। अथवा यदि ये छात्र अपना स्वरोजगार शुरू करते ह तो इन्हें अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त होती है किन्तु विद्यार्थियों की अभिवृत्ति किस ओर अधिक है, यह जानना परम आवश्यक है।

यह अध्ययन विद्यार्थियों की नौकरी एवं व्यापार सम्बन्धी अभिवृत्ति को जानने का प्रयास करता है एवं इस दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वूर्ण है। +2 के बाद विद्यार्थी अत्यधिक असमंजस की स्थिति में रहते ह कि स्नातक स्तर पर उन्हें कौन सा कोर्स चुनना चाहिये जो उनक भविष्य को एक निश्चित दिशा प्रदान करे। यह अध्ययन शिक्षकों के लिये भी अति उपयोगी है जो +2 स्तर पर छात्र तथा छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति को जानकर उन्हें उचित कोर्स में प्रवेश करने की सलाह एवं निर्देशन दे सकते ह। इससे देश को भी कुशल नागरिक प्राप्त होंगे जो देश की उत्पादन प्रणाली में वृद्धि तथा संशोधन कर सकेंगे और इससे देश के औद्योगिक एवं वैज्ञानिक विकास को एक नवीन दिशा प्राप्त हो सकेगी।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया गया है

1.उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति को समझना।
2.उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्र तथा छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति में भिन्नता को पहचानना।
3.उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर पारिवारिक आय के प्रभाव का आकलन करना।
4.उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर छोटे एवं बड़े परिवार के प्रभाव को जानना
5.उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर पारिवारिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का मूल्यांकन करना।

शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन में की गयी परिकल्पनायें निम्नलिखित है।

1.छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2.निम्न पारिवारिक आय तथा उच्च पारिवारिक आय के परिवार से सम्बन्धित विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3.छोटे आकार एवं बड़े आकार के परिवार से सम्बन्धित विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4.व्यापारिक पृष्ठभूमि एवं सर्विस पृष्ठभूमि से सम्बन्धित विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

शोध की कार्यविधि, न्यायदर्श का वितरण, आंकड़ो के संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण प्राप्त प्रदत्तों की गणना एवं उनके वि लेशण में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियों का विवेचन निम्नलिखित है।

अनुसंधान प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध अध्ययन को सफल बनाने हेतु शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का चयन किया। शोध समस्या के अध्ययन हेतु विद्यमान तथ्यों का अध्ययन, स्थिति का आकलन, वर्णन एवं व्याख्या करके किसी निश्चित तथ्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु सर्वेक्षण विधि सर्वोतम है।

शोध की जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि के आधार पर अध्ययन हेतु बरेली के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चुना गया है। वर्तमान में बरेली शहर के अन्तर्गत लगभग 78 विद्यालयों में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यू0पी0 बोर्ड के लगभग 70,000 विद्यार्थी अध्ययनरत ह।

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत शोध समस्या के अध्ययन हेतु उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को न्यादर्श के लिये चुना। शोधार्थी का न्यादर्श बरेली शहर में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों का है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति को मापने के लिये जी0आर0 सोनटके द्वारा निर्मित व्यावसायिक अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया । प्रस्तुत उपकरण में 40 प्रश्नों का रखा गया है जिसका उत्तर सहमत या असहमत में देना है। ये प्रश्न नौकरी एवं व्यवसाय अभिवृत्ति से सम्बन्धित है। प्रस्तुत उपकरण में विश्वसनीयता के परीक्षण के लिये अर्द्ध विच्छेद विधि एवं परीक्षण पुनः परीक्षण विधि प्रयोग की गयी। अर्द्ध विच्छेद विधि का सह संबंध गुणांक 0.72 पाया गया तथा परीक्षण पुनः परीक्षण विधि का गुणांक 0.78 पाया गया। वैधता के लिये 100 छात्र एवं छात्राओं की साक्षात्कार विधि अपनायी गयी। साक्षात्कार से प्राप्त अंको और अभिवृत्ति मापनी का सह संबंध गुणांक 78 पाया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं निष्कर्ष प्राप्ति हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण, सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है। छात्र–छात्राओं के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जॉच के लिये टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध परिणाम एवं निष्कर्षः–

व्यावसायिक अभिवृत्ति मापनी परीक्षण द्वारा प्राप्त आंकड़ो का वि लेशण एवं व्याख्या निम्न सोपानों में की गयी है।

तालिका–1

अभिवृत्ति	नौकरी सम्बन्धी	व्यापार सम्बन्धी
सकारात्मक	38.33%	52.50%
उभयनिष्ठ	44.16%	36.67%
नकारात्मक	17.50%	10.83%
योग	100%	100%
मध्यमान	11.23	11.10
मानक विचलन	2.61	2.44

व्याख्याःनौकरी सम्बन्धी अभिवृत्ति–प्रस्तुत तालिका यह दर्शाती है कि विद्यार्थियो में उभयनिष्ठ अभिवृत्ति का स्तर सबसे उच्च है जिसका तात्पर्य है कि अधिकांश विद्यार्थियों की अभिवृत्ति नौकरी तथा व्यापार दोनों व्यसवायों की तरफ हैं। विद्यार्थी नौकरी के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं तथा नकारात्मक अभिवृत्ति का स्तर सबसे निम्न है।

व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्ति–विद्यार्थियों की व्यापार सम्बन्धी सकारात्मक अभिवृत्ति सबसे उच्च है जिसका तात्पर्य है कि विद्यार्थी व्यापार के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। इसके उपरान्त उभयनिष्ठ अभिवृत्ति का स्तर है जिसका तात्पर्य है कि कुछ विद्यार्थी नौकरी एवं व्यापार के प्रति समान अभिवृत्ति रखते ह तथा बहुत ही कम विद्यार्थी ऐसे हैं जो व्यापार के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

तालिका–2

छात्र तथा छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति का विवरण

अभिवृत्ति	छात्र=(N=60)		छात्रायें=(N=60)		टी अनुपात df-118
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
नौकरी सम्बन्धी	10.90	2.75	11.55	2.45	1.34
व्यापार सम्बन्धी	10.55	2.22	11.65	2.54	2.52

* 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या– छात्र एवं छात्राओं की नौकरी सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है एवं व्यापार सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।

तालिका–3

विद्यार्थियों की पारिवारिक आय के आधार व्यावसायिक अभिवृत्ति का विवरण

अभिवृत्ति	निम्न पारिवारिक आय (N=67)		मध्यम एवं उच्च पारिवारिक आय (N=53)		टी अनुपात df-118
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
नौकरी सम्बन्धी	10.07	2.67	11.43	2.55	2.84 **
व्यापार सम्बन्धी	11.12	2.61	11.08	2.22	0.09

* 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

व्याख्या–निम्न पारिवारिक आय तथा मध्यम एवं उच्च पारिवारिक आय से सम्बन्धित विद्यार्थियों की नौकरी सम्बन्धी अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है तथा निम्न पारिवारिक आया तथा मध्यम तथा उच्च पारिवारिक आय से सम्बन्धित विद्यार्थियों की व्यापार सम्बन्धी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–4

विद्यार्थियों की पारिवारिक आकार के आधार व्यावसायिक अभिवृत्ति का विवरण

अभिवृत्ति	बड़ा आकार (N=90)		छोटा आकार (N=30)		टी अनुपात df-118
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
नौकरी सम्बन्धी	11.31	2.63	11.00	2.61	0.562
व्यापार सम्बन्धी	11.13	2.49	11.00	2.30	0.262

व्याख्या–उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बडे आकार के परिवार तथा छोटे आकार के परिवार से सम्बन्धित विद्यार्थियों की नौकरी सम्बन्धी अभिवृत्ति तथा व्यापार सम्बन्धी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका–5

विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार व्यावसायिक अभिवृत्ति का विवरण

अभिवृत्ति	व्यापारिक पृष्ठभूमि (N=50)		नौकरी पृष्ठभूमि (N=70)		टी अनुपात df-118
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
नौकरी सम्बन्धी	11.30	2.67	11.19	2.59	0.225
व्यापार सम्बन्धी	10.94	2.30	11.21	2.54	0.605

व्याख्या–प्रस्तुत टी मान 0.225 तथा 0.605, 0.05 तथा 0.01 पर सार्थक नहीं है जो यह दर्शाता है कि व्यापारिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों तथा नौकरी पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की नौकरी सम्बन्धी अभिवृत्ति तथा व्यापार सम्बन्धी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शैक्षिक उपयोगिता

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लिंग के आधार पर छात्र व छात्राओं की नौकरी सम्बन्धी अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पडता है। अतः अभिभावकों एवं शिक्षका को चाहिये कि वे छात्र एवं छात्राओं को समान रूप से रूचि व योग्यता के आधार पर व्यावसायिक शिक्षा दिलाने का प्रयत्न करें।

+2 स्तर के छात्र व छात्रायें यदि अपनी रूचि एवं योग्यता के आधार पर कोर्स का चुनाव करेंगे तो इससे राष्ट्र को योग्य नागरिक प्राप्त होंगे जो आर्थिक रूप से समृद्ध होगे। आज के विद्यार्थी ही कल के नागरिक होंगे इसलिये +2 स्तर पर ही उनको व्यावसायिक निर्देशन देना अति आवश्यक है।

REFERENCES

- *Buch, M. B. (1983). Fourth Survey of research in education. Publish at Publication Department by secretary N.C.E.R.T., New Delhi, Vol I & II. pp. 1983-88.*
- *Deshmukh, N. (1955). Stay on some physical factors associated with the vocational attitude. Indian Educational Review,Vol III, pp. 440-455.*
- *Kapil, H. (2010). A study on vocational attitude of higher secondary students. Unpublished M.Ed. dissertations, Varanasi: Banaras Hindu University.*
- *Kulkarni, K. (2004). A study on effect of educated mother on the vocational attitude of their children. Unpublished doctoral dissertation, Meerut : Meerut University.*
- *Kulsrestha, L. (1981). A study on certain factors related to differential patterns of achievement among bright students. Unpublished doctoral dissertation, Meerut: Meerut University.*
- *Lal, R. B. & Palod, S. (2009). Shaikshik Chintan avam Prayog. Meerut: R. L. Book Dept.*
- *Mishra, N. (2000). A study on vocational attitude of hearing impaired students. Indian Educational Review, Vol II pp 240-260.*
- *Pathak, P. D. (1995). Bhartiya Shiksha aur uski Smasyayen. Agra: Vinod Pustak Mandir, pp 113-150.*
- *Singh, D. (1993). A study on vocational attitude of higher secondary students. Unpublished M.Ed. dissertations, Bareilly: M.J.P. Rohilkhand University.*
- *Sodhi, T. S. (1988). Vocational attitude and occupational choice of adolescence girls of Chandighar. Indian Educational Review,Vol III, pp.345-360.*
- *Vardhan, P. (1965). A study on vocational courses of high school students. Indian Educational Review, Vol IV pp430-433.*

***